letter2:letter1.qxd 9/26/2010 8:42 PM Page 118

आज भी राष्ट्र-पुनर्रचना में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं।

स्वतंत्रता प्राप्ति के अवसर पर हमें सोचना चाहिए था कि सदियों तक गुलामी में रहने के बावजूद अपना समाज टिका क्यों रहा? हमारी सभ्यता और संस्कृति नष्ट क्यों नहीं हुई? बुरे से बुरे दिनों में भी स्वतंत्रता प्राप्ति की आकांक्षा बनी कैसे रही? राजसत्ता से वंचित होकर भी हम फिर स्वतंत्र कैसे हुए? इन रहस्यों को जानने का प्रयास किया होता तो राष्ट्र-नवरचना का कार्य योग्य दिशा में गतिशील होता।

उसी समय सामाजिक, सांस्कृतिक, शैक्षणिक, आर्थिक, राजनीतिक और धार्मिक विचारकों की, राष्ट्र-नवनिर्माण की दिशा निर्धारित करने के लिए, सामूहिक विचारगोष्ठियाँ आयोजित की जाती तो देशोन्नति में सबका सहयोग संभव होता। इस अनिवार्य कार्य की पूर्णत: अवहेलना की गई और राजसत्ता को ही कल्पवृक्ष माना गया। राष्ट्र-जीवन के अन्य सभी महत्वपूर्ण पहलू भुला दिए गए।

आध्यात्मिक अधिष्ठान के बिना जनजीवन स्वास्थ्य लाभ नहीं कर सकता। प्रत्येक मानव में शरीर, मन और बुद्धि के साथ आत्मा अभिन्न रुप से जुड़ी रहती है। वह ही मानव में संवेदनशीलता, सहिष्णुता, नैतिकता, विवेकशीलता, प्रामाणिकता, कर्तव्य-परायणता, सदाशयता, स्नेहशीलता, परस्पर पूरकता एवं सहअस्तित्व के मानवीय गुणों की प्रेरणा प्रदान करती है। इस प्रक्रिया को ही आध्यात्मिकता कहते हैं। इस सर्वाधिक महत्व के कार्य को सभी ने नजरअंदाज किया है। पूजा-पाठ करना मात्र अध्यात्मिकता नहीं है। उपर्युक्त गुणों के बिना जनजीवन शांतिदायक, सुखमय और उन्नतशील बन नहीं सकता।

राजसत्ता में उपर्युक्त गुणों का सृजन करने की क्षमता ही नहीं है। केवल राजसत्ता कलह का कारण बनती है। वह नवस्वतंत्र देश का चतुर्दिक विकास कर ही नहीं सकती। वह अकेले विषमता का कारण बनती है। उसी को सर्वस्व मानने के कारण असंख्य बलिदान देकर प्राप्त स्वतंत्रता भ्रष्टाचार की वेदी पर बलि चढ़ गई है।

स्वतंत्र भारत में केवल भ्रष्टाचार ही पनप रहा है। वह इतना प्रबल हो गया है कि उसने केन्द्रीय मंत्रीमंडल पर भी अपना प्रभाव जमा लिया है। आए दिन ऊंचे से ऊंचे प्रशासकों के यहां से करोड़ों की संपत्ति पकड़ी जा रही है। स्टैम्प पेपर घोटाले ने तो देशभर को अपने जाल में फंसा लिया। किन्तु शासन को उसकी भनक तक नहीं लगी। ऐसी है हमारी शासन-व्यवस्था। हमारी न्याय-व्यवस्था भ्रष्टाचार में लिप्त लोगों को सजा देने में इतना विलंब करती है कि किसी भ्रष्टाचारी को सजा मिलने की संभावना ही नजर नहीं आती। बिना घूस के नागरिकों को सरकारी दफ्तरों से अपने छोटे से छोटे काम करवाना भी संभव नहीं रहा। अर्धशताब्दी की राजनीति ने हमें इस अवस्था में ला पटका है। भ्रष्टाचार की इस देशव्यापी महामारी से मुक्ति दिलाने वाला कोई नेता, दल या संगठन दिखाई नहीं देता। नई पीढ़ी के अलावा यह आवश्यक काम कौन करेगा?

पिछले कुछ समय के घटनाक्रम से मेरा यह विश्वास दृढ़ हो चला है कि राजनीति के भरोसे देश का विशेषकर गांवों का विकास नहीं हो सकता। इसके लिए समाज को ही आगे आना होगा और समाज को ऊर्जा देने क काम सिर्फ युवा-वर्ग ही कर सकता है। मैं देश की तरुणाई का पुन: आह्वान करता हूँ कि वह अपना उत्तरदायित्व समझे और गांडीव उठाए।

शुभाकांक्षी

नाना देशमुख

(नाना देशमुख)

राजनीति के भरोसे देश का विशेषकर गांवों का विकास नहीं हो सकता। इसके लिए समाज को ही आगे आना होगा और समाज को ऊर्जा देने का काम सिर्फ युवावर्ग ही कर सकता है।

6

नानाजी की पाती युवाओं के नाम

प्रिय युवा बंधुओं और बहनों,

विदेशी शासकों के प्रति आक्रोश और संघर्ष अधिकाधिक उग्र बनाने के लिए व्यापक जन-आंदोलन करना आवश्यक था। शौर्यपूर्ण गीतों की रचना करना और प्रभावी ढंग से गाना तथा जोशीले भाषणों से नौजवानों में उत्साह, त्याग और बलिदान की भावनाएं जगाना जरुरी था। विदेशी शासकों के दमनकारी कदमों में अवरोध निर्माण करने के लिए संचार माध्यमों में खराबी उत्पन्न करना भी युक्तिसंगत था। ये सब कार्य स्वराज्य प्राप्ति तक ही सीमित होने चाहिए थे।

स्वराज्य प्राप्ति के बाद ''निर्माण युग'' प्रारंभ होना चाहिए था। राष्ट्र नवरचना में हर नागरिक को सहयोगी बनाना आवश्यक था। देश सदियों तक गुलामी में जकड़ा हुआ था। स्वतंत्र देश के नागरिकों के कर्तव्य की जानकारी उपलब्ध कराना नेतृत्व का दायित्व था। स्वावलंबन का स्वभाव विस्मृत हुआ था। सहअस्तित्व एवं सामाजिक दायित्व की भावना लुप्त हुई थी। आबादियों में परस्पर सहयोग की आदत शेष नहीं थी। पारतंत्र्य के कारण नागरिक सत्ताभिमुखी बने थे।

स्वराज्य पाते ही देश के नागरिकों में गुलामी के कारण आयी इन खराबियों को दूरकर सहअस्तित्व, परस्पर पूरकता एवं स्वावलंबन का स्वभाव विकसित करने के कार्य को प्राथमिकता दी जानी चाहिए थी। दुर्भाग्य से आजादी के गत उनसठ सालों में इस अनिवार्य कार्य की घोर उपेक्षा की गई और अपनी ही सरकार को विदेशी सरकार जैसा मानकर स्वातंत्र्य संग्राम के काल के विध्वंसात्मक कार्यक्रमों को जारी रखा गया है। कारण, स्वतंत्र भारत के राजनेताओं का लक्ष्य राष्ट्रोन्नति न होकर सत्ता प्राप्ति मात्र बन गया है।

राजसत्ता के लोभ में हमने अपनी मातृभूमि का विभाजन तक स्वीकार किया। सत्य और अहिंसा के पुजारियों ने लाखों निरीह लोगों की हत्याएं होने दीं। असंख्य परिवारों को परंपरागत घरों से उजड़ते हुए शरणार्थी बनने के लिए विवश किया।

सत्ता पाने के लिए अपने ही समाज का विघटन करने में संकोच नहीं किया। इसका प्रतिफल सभी दलों को भुगतना पड़ रहा है। हर एक दल टूट-फूट का शिकार बना है। इन दलों के चोटी के नेता भी एक-दूसरे को अपराधी घोषित कर रहे हैं। यह बना है स्वतंत्र भारत की राजनीति का चरित्र।

अब चुनाव में लालू वाद, मुलायम वाद, नीतिश कुमार वाद, चौटाला वाद, मायावती वाद, क्षेत्रीयवाद आदि सत्ताप्राप्ति के प्रभावी साधन बने हैं। हिन्दुत्व का अभिमान रखने वालों के पास हिन्दुओं में बढ़ रहे इस बिखराव को रोकने का तथा उसमें एकात्मता निर्माण करने का कोई व्यावहारिक उपक्रम दिखाई नहीं देता। मुस्लिम-तुष्टिकरण के खिलाफ हिन्दू रथ-यात्राएं निकाली जा रही हैं। फलस्वरुप, परोक्ष रुप से मुस्लिम वोट-बैंक की ही कीमत और अधिक बढ़ाने का काम हो रहा है।

1947 के पूर्व नौजवानों में देश के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर करने की प्रबल आकांक्षाएं थी। किन्तु स्वतंत्र भारत के नेतृत्व के आचरण के कारण स्वार्थसिद्धि की वृत्ति सर्वव्यापी बन गई है।

स्वतंत्र भारत में सामाजिक और राजनीतिक अवस्था में ही खराबी नहीं आई है, अपितु आर्थिक स्थिति भी बहुत बिगड़ गई है। जोर-शोर से प्रचार किया जा रहा है कि भारत विश्व की एक महाशक्ति बनने की ओर बढ़ रहा है। अमेरिका के राष्ट्रपति भी ऐसा ही प्रमाण-पत्र दे रहे हैं। किन्तु देश में अनेक स्थानों पर किसान दारिद्रय से तंग आकर आत्महत्याएं करने लगे हैं। क्या इन दोनों बातों में कोई मेल है?

जोर-शोर से प्रचार किया जा रहा है कि भारत विश्व की एक महाशक्ति बनने की ओर बढ़ रहा है। किन्तु देश में अनेक स्थानों पर किसान दारिद्रय से तंग आकर आत्महत्याएं करने लगे हैं।